लीना मेहेंदले के हिंदी लेखन का परिचय

श्रीमती लीना मेहेंदले एक कुशल प्रशासक, और सजग पाठक होने के साथ साथ हिंदी एवं मराठी की एक सिद्धहस्त लेखिका भी हैं। लेखन के विषय हैं प्रशासन, स्त्री विमर्ष, बाल साहित्य, विज्ञान, आयुर्वेद। भारतीय मिथकों का आधुनिक संदर्भ में विवेचन भी इनके लेखन की विशेषता मानी जाएगी। महाराष्ट्र में जन्मीं पर बिहार में पढी - बढी मेहेंदले संस्कृत एवं अन्य कई भारतीय भाषाओंका ज्ञान रखती हैं। साथ ही एक अच्छे वाचक होने के नाते अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मेहेंदलेकी अबतक चार सौ से अधिक रचनाएँ छप चुकी हैं। वे एक अच्छी वक्ता हैं और अबतक सौ से अधिक भाषण जनसामान्य की सभाओं में दे चुकी हैं जो प्रशासन से संबंधित हैं। मराठी में लोकसत्ता, मटा, सकाळ, लोकमत, गांवकरी, अंतर्नाद, आदि अखबारों में नियमित लेखन। प्रशासन, अणु- विज्ञान, पक्षी निरीक्षण, आकाश निरीक्षण, तथा निसर्गोपचार विषयों पर लेखमाला, दो बाल कथासंग्रह, तथा कई भारतीय भाषाओंसे अनूदित दो कथासंग्रह प्रकाशित। **NBT** के लिए डेमोक्रेसी शीर्षक पुस्तक का मराठी अनुवाद।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कवि श्री कुसुमाग्रज की १०८ कविताओंका सुंदर और समर्थ अनुवाद मेहेंदले ने किया है जो आनन्दलोक शीर्षक पुस्तकमें संकलित हैं। इनमें से ४० कविताएँ लीनाजी एवं लक्ष्मीशंकर बाजपेयी के स्वरमें ऑडिओ कॅसेट पर उपलब्ध हैं। लीनाजी नें कई अन्य कविताओंका भी हिन्दी व मराठी में अनुवाद किया है।

हिंदी लेखन का सिलसिला भी बीस वर्षों से अधिक काल चल रहा है। नभाटा, जनसत्ता, हिंदुस्तान, महानगर, प्रभात खबर आदि अखबारों में तथा देशबन्धु, कथादेश, हिमप्रस्थ, विपाशा, इंद्रप्रस्थ, समकालीन साहित्य आदि मासिक प्रकाशनों में निरंतर लेखन किया। बाल साहित्य भी बालभारती, देवपुत्र, नंदन, स्नेह इत्यादि मासिकों में छपता रहता है।

आपने मराठी के जाने माने कवि कुसुमाग्रजकी कविताओंका हिंदी में अनुवाद किया जो आनंदलोक नाम से प्रकाशित है साथ ही वेब साइट एवं कैसेट में भी उपलब्ध है। अन्य पाँच पुस्तकें "फिर वर्षा आई" (बालकथा संग्रह), "देवदासी" (अपने कार्यालयीन अनुभव पर आधारित) जो खास तौर पर ग्रामीण महिलाओं के लिए लिखी गई, "शीतला माता" जो आयुर्वेदिक लसीकरण का पक्ष बताती है, पक्षी निरीक्षण का अनूठा लेखन "सुवर्ण पंछी" और हिंदी दैनिकों के लिए लिखे लेखों पर आधारित "जनता की राय" काफी चर्चित रहीं। उनकी संपादित पुस्तकें "बूँद बूँद की बात" ऊर्जा संरक्षण तथा "युगंधरा" स्त्री सक्षमीकरण के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाती हैं।

आज हिंदी के साथ साथ सभी भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी की तुलना में पिछड रही हैं इसे दुर्भाग्यपूर्ण मानते हुए उन्हें आगे बढाने के लिए मेहेंदले कुछ ठोस उपायों की पक्षधर हैं जिनमें संगणक सुविधा जैसे मुद्दे भी शामिल हैं। अपने कार्यालयीन कामकाज के हेतु महत्वपूर्ण विषयों पर दो बार हिंदी भाषी मासिक पत्रिकाओं का संपादन भी किया। पहली थी निसर्गोपचार वार्ता तथा दूसरी है संरक्षण चेतना (पेट्रोलियम के संदर्भ से)। इन्हीं विषयों पर वीडियो फिल्में, एवं रेडियो कार्यक्रम भी तैयार करवाए। मेहेंदले स्वयं भी आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के कई कार्यक्रमों में नियमित वक्ता हैं।

विभिन्न भाषी आधुनिक एवं प्राचीन साहित्य से गहराई से परिचित होने के कारण मेहेंदले की रचनाएँ एक अनूठा, विशाल कॅनवास प्रस्तुत करती हैं। यही अनूठापन उनके भाषणों में भी ध्वनित होता है।